

लगाती। शायद तुम इस वास्तविकता को स्वीकार भी नहीं कर पाते। और तब मेरे पास स्वयं को सही सिद्ध करने का कोई अन्य विकल्प भी नहीं होता, क्योंकि तुम्हारी दृष्टि साधारण थी। इसलिए मैंने तुममें ही परखने का हुनर भर दिया। अब तुम स्वयं ही असली और नकली की पहचान करो।'

यह दृष्टांत सुनाकर गुरु महाराज जी ने उस जिज्ञासु को समझाया कि, 'इसी प्रकार हम यह नहीं बताते कि व्यक्तिगत रूप से कौन गुरु सच्चा है और कौन झूठा। हम तो यहाँ एक शास्त्रसम्मत कसौटी देते हैं, जिसके आधार पर आप स्वयं ही इस सत्य का पता लगा सकते हैं। इस कसौटी पर कसकर खुद सच्चे-झूठे की परख कर सकते हैं...

हीरा परखे जौहरी, शब्द को परखे साध।

जो कोई परखे साध को, ता का मता अगाध॥

यहाँ हम आपको वह 'अगाध मति' अर्थात् विवेक देते हैं, जिससे आप स्वयं साधु (संत) की पहचान कर सकें।'

अगर इस कसौटी और गुरु में चवन्नी भर का भी फर्क हो, तो पल भर की भी देर न लगाएँ। अमुक बाबा जी को दूर से ही प्रणाम कर, पैरों की धूल वहीं झाड़ें और आगे बढ़ चले।

अब आप पूछेंगे कि स्वामी जी, भला यह कसौटी कौन सी है? तो बंधुओं सुनो- यह कसौटी है... न न, तनिक सब कीजिए। अगर यूँ सीधे ही खरी कसौटी बता देंगे, तो हो सकता है कि आप

आर्ष ग्रंथों ने भी ऐसे ही गुरु को खरा प्रमाणित किया है -

अन्तःस्थ सच्चिदानन्दसाक्षात्कारं सुप्ताधयेत्।

योऽसावेव गुरुः प्रोक्तः परो नामधर स्मृतः॥

अर्थात् सच्चा गुरु वही है जो हमें अन्तःस्थित सच्चिदानन्द का साक्षात्कार करा दे। अन्य सब तो नाम के गुरु ही हैं।

पूर्ण गुरु ब्रह्मज्ञान में दीक्षा देते समय एक जिज्ञासु को अन्तर्दृष्टि प्रदान करते हैं। उसे अंतर्मुखी बना देते हैं। इसके फलस्वरूप जिज्ञासु अपने अंतर्जगत में अनेकानेक दिव्य-अनुभूतियाँ करता है। और फिर यही कहता है -

सद्गुरु ऐसा खेल दिखाया मोहे देख अचम्भा आया।

नाभ कमल से पकड़ा हमको दसवां द्वार लंघाया॥

अर्थात् सत्गुरु ने मेरे मस्तक पर हाथ रखकर मेरा दसवां द्वार खोल दिया। मुझे मेरे भीतर ही ऐसे-ऐसे दिव्य खेल (अनुभव) दिखाए कि मैं अचम्भित रह गया।

ब्रह्मानन्द जी ने भी स्वामी रामकृष्ण परमहंस की कृपा से जब अपने भीतर ऐसे दिव्य अनुभव किए तो वे गा उठे-

अचरज देखा भारी रे साधो, अचरज देखा भारी रे,
गगन बीच अमृत का कुँआ, सदा झरे सुखकारी रे,
बिना बजाए निशादिन बाजे घंटा शंख नगाड़ी रे॥
बिन धरती एक मंदिर देखा, तामे ज्योत उजारी रे॥
अर्थात् गुरु कृपा से मैंने अपने भीतर ऐसे-ऐसे अचरज देखे

और जो बन्धु अभी गुरु धारण करने का विचार कर रहे हैं, वे भी अब एक पल न गँवाए। मेरी मानिए, आज ही 'सच्ची कसौटी' की सिल उठाएँ। गुरु-दरबारों या डेरों पर धिस कर देखें। जो खरा निकले, उसे गुरु धारण कर लें। उसके चरणों को जन्म-जन्मांतरों तक न छोड़ने की कसम खा लें।

इस प्रयास की शृंखला में, एक बार 'दिव्य ज्योति जाग्रति संस्थान' भी जरूर पधारें। यहाँ आप सादर आमंत्रित हैं। आपको यहाँ अवश्य ही शुद्ध कुंदन सी चमक मिलेगी। यह अहंकार नहीं, गर्व है। बहकावा नहीं, दावा है। जो एक नहीं, श्री आशुतोष महाराज जी के हर शिष्य के मुख पर सजा है- 'हमने ईश्वरीय ज्योति अर्थात् प्रकाश और अनंत अलौकिक नजारे देखे हैं। अपने अंतरजगत में। वो भी दीक्षा के क्षण ही।' ■ ■

‘मास्टर जी, उन्नीस!’ पास से ही एक अनुभवी गढ़रिया गुज़र रहा था। वह टोकते हुए बोला- ‘बिल्कुल गलत जवाब! एक भी नहीं बचेगी, क्योंकि यदि एक भेड़ कुँए में गिरी तो शेष सभी उसका अनुसरण करते हुए कुँए में कूद पड़ेंगी।’ इसे कहते हैं- भेड़चाल। इसलिए साधो, सावधान! आप ऐसी मानसिकता न रखें। भीड़ के संग भेड़चाल न चलें।

कुछ भाई-बंधुओं और माताओं को तो बाबा जी के चेहरे का नूर ही छल लेता है। कहते हैं- ‘स्वामी जी, देखिए न, कैसा जलाल है उनके चेहरे पर! तप चमक रहा है।’ मगर भोले मानस, हमें यह बताओ- शिराडी के पूर्ण गुरु साईं बाबा के मुखड़े पर तो झुर्रियों का जाल बिछा था। क्रांतिकारी गुरु चाणक्य का चेहरा चेचक के दागों से मढ़ा था। प्लेटो आदि दार्शनिकों के गुरु सुक्रात निहायत कुरूप थे। अष्टावक्र आठ अंगों से टेढ़े थे। तो क्या ये सभी तपविहीन थे? नहीं! बल्कि ये तो तपस्या के साक्षात् प्रतीक थे। इसलिए जलाल-तलाल को देखकर न बहकें। हो सकता है, बाबा जी के चेहरे पर अंगूरी नूर दमक रहा हो। अनार-रस की लाली उछालें मार रही हो।

कुछ बंधु सिर्फ ‘चमत्कार को नमस्कार’ करते हैं। बाबा जी ने एक हाथ लहराया, तो घड़ी प्रकट हो गई। दूसरा घुमाया तो सेब-संतरे! टोना-टोटका फेंका, तो बीमारी रफूचक्कर हो गई। बिगड़ा काम बन गया। जी बस, हो गए हम कुर्बान। बाबा जी के करतबों के सैन्ट परसैन्ट फैन! मगर आधुनिक युग की संतानों, तनिक

इत
Jad
कित
परम
खड़ा
अपनी
‘जी बि
बाबाओं
कहते हैं
दिव्य शा
कसौटी-त
‘भाई, सब
तो सुझाते
ज्यादा सोच
खतरनाक है
की जड़ों पर
खर-पतवार
मानसिकता
लेते हैं। महिम
की श्रद्धा को

तत्त्ववेत्ता सद्गुरु के रूप में नारद को तत्त्वज्ञान की दीक्षा प्रदान की-
'तमसस्पारं दर्शयति'। उसको पाकर ही नारद ने मानो तृप्ति की
डकार ली। भगवद् आनन्द को पाया।

यकीन मानो सज्जनो! दूसरे वैदिक पूर्वजों ने भी हमसे
अपना यही अनुभव सांझा किया- दीक्षा विहीनस्य न सिद्धिर्न च
सद्गतिः - अर्थात् दीक्षा के बिना न तो सिद्धि और न ही सद्गति
प्राप्त हो सकती है। आगे उन्होंने कड़े शब्दों में हिदायत भी दी-
तस्मात् सर्व प्रयत्नेन गुरुणा दीक्षितो भवेत्- पूरी ईमानदारी और
भरसक कोशिशों से पूर्ण गुरु द्वारा दीक्षित हों। बड़े-बुजुर्गों की तो
हमेशा से नसीहत रही है कि- 'गुरु बिना गत नहीं'। ग्रंथों ने भी
एक स्वर में चेताया है कि- 'गुरु बिनु भवनिधि तरङ्ग न कोई'।
पीर-फकीर-महापुरुष तो यह गाते-गाते कभी थके ही नहीं कि-
'बिनु सतिगुरु किनै न पाइओ, बिनु सतिगुरु किनै न पाइआ'।

इसे एक वैज्ञानिक नियम से भी समझते हैं। हार्डट्रोजन और
ऑक्सीजन मिलकर पानी बनाते हैं। पर कब? जब उनके बीच से
विद्युत को गुजारा जाता है। विद्युत की उपस्थिति के बिना हार्डट्रोजन
और ऑक्सीजन परमाणुओं का परस्पर संयोग नहीं हो सकता। इसी
प्रकार गुरु रूपी शक्ति की उपस्थिति के बिना हमारा ईश्वर से मिलन
सम्भव नहीं है।

यह परमात्मा द्वारा निर्मित एक अटल नियम है। जिसे हम
और आप चाह कर भी नहीं उलट सकते। ठीक वैसे जैसे किसी को

अपनी नेत्रहीनता का उपचार कराना है, तो नेत्र चिकित्सक की ही पनाह लेनी होगी। यह नितांत अटूट नियम है। इतना अटूट कि अगर कल किसी नेत्र चिकित्सक को अपनी नेत्रहीनता के उपचार की ज़रूरत पड़े, तो वह भी यह उपचार स्वयं करने में असमर्थ है। उसे भी किसी अन्य नेत्र चिकित्सक की टेक लेनी ही पड़ेगी। यही कारण था सज्जनो, कि परम् सद्गुरु साक्षात् प्रभु श्री राम ने भी इस नियम को रजामंदी दी। गुरु वशिष्ठ के आश्रित हुए। द्वापर युगीन जगद्गुरु कृष्ण ने भी इन्हीं पदचिह्नों का अनुसरण किया। अशरण शरण स्वयं ऋषि दुर्वासा की शरणागत हुए-

**रामकृष्ण ते को बड़ो, तिनहूँ भी गुरु कीन।
तीन लोक के नाथका गुरु आगे आधीन॥**

इस संदर्भ में कुछ लोग अकसर एक प्रश्न उठा देते हैं। वह यह कि फिर मीरा, नामदेव, धन्ना आदि भक्तों ने बिना गुरु के प्रभु को कैसे पा लिया था? मीरा श्री कृष्ण से बातें किया करती थी। नामदेव ने 72 बार विट्ठल का दर्शन किया था। धन्ना ने तो पत्थर तक में से भगवान को प्रकट कर लिया था। इनके पास तो कोई गुरु नहीं था। पर जो लोग ऐसा कहते हैं उनका ज्ञान अधूरा है। निःसन्देह इन भक्तों के प्रेम व भावना के वशीभूत होकर भगवान इनके समक्ष प्रकट हो जाया करते थे। पर इससे इनका पूर्ण कल्याण नहीं हो पाया था। वे प्रभु के तत्त्वरूप का साक्षात्कार नहीं कर पाए थे। इसलिए बाद में इन सब ने भी पूर्ण गुरु की शरण ग्रहण की थी। इतिहास बताता है कि मीरा ने गुरु रविदास जी से, नामदेव ने विशोबा खेचर से व धन्ना

इसी रौ में स्वामी रामकृष्ण परमहंस तो एक गुद्गुदाता चुटकला ही कह गए। एक इलाके में सुनार की बड़ी आकर्षक दुकान थी। उससे भी आकर्षक सुनार का परिवार था। दिखने में परम वैष्णव। गले में कंठी। कलाइयों में रुद्राक्ष। माथे पर चन्दनतिलक। खरीददार उनके रूप पर विमुग्ध हुए खिंचे चले आते। भीतर कदम धरते, तो सुनार परिवार का कोई जपता- केशव। केशव। कुछ क्षण बाद, दूसरा सुमिरता- गोपाल। गोपाल। उसकी सुनकर तीसरा कहता- हरि। हरि। फिर चौथा गाता- हर। हर। जिसे देखो, उसके होठों पर बस प्रभु नाम का गहना। इन मुँह अखरे गहनों की चकाचौंध खरीददारों की आँखें चौंधिया डालती। कुछ ऐसे कि सुवर्ण गहनों की शुद्धता की ओर तो उनका ख्याल ही नहीं जाता। वे सोचते- वाह! क्या संस्कारी घराना है। निश्चित हो, आँखें मीचकर सौदा करते... मगर पता है, केशव-केशव की धुन में क्या सवाल छिपा था? यही कि- ये (खरीददार) कैसे हैं? कैसे हैं? गोपाल-गोपाल का अर्थ था- अरे घबराओ नहीं! ये गौओं का सीधा-सादा दल है। अच्छा, फिर हरें (हरण करें) क्या? - यही हरि-हरि में छुपी गूँज थी। फिर चौथा सदस्य हर-हर कहकर अपनी राय देता- हौं-हौं, हरो! हरो! जल्दी हरो!

सज्जनो! सम्भव है, इसे पढ़कर आपके होठों पर हल्की-सी मुस्कान खिली हो। अच्छा है, मुस्कुराइए। मगर साथ ही इन उदाहरणों या कहानियों के इशारे पकड़िए। इनके सबक ग्रहण कीजिए। वाक्पटुता या मधुर व्याख्यान- ये भी ठगी के नुस्खे हैं।

सो, ऐसी धारणा के धारक न केवल समाज का, बल्कि स्वयं अपना भी पतन कर डालते हैं। अपना लोक-परलोक दोनों बिगाड़ लेते हैं। प्रभु श्री कृष्ण ने भी गीता में स्पष्ट कहा-

यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः।

न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम्॥

अर्थात् जो पुरुष शास्त्रविधि को त्यागकर अपनी कामना से प्रेरित होकर ही कार्य करता है, वह न पूर्णत्व की सिद्धि प्राप्त करता है, न सुख और न ही परम गति।

अतः प्रेमी-बंधुओ, जिज्ञासा करें, उस शास्त्रसम्मत दिव्य कसौटी को जानने की जिस पर वह पूर्ण महापुरुष जुग-जुगों से खरे उतरते रहे हैं और आगे भी रहेंगे। अब वह उचित समय और स्थल आ गया है, जहाँ आपको वह सच्ची कसौटी बता दी जाए। मगर अब भी हम यह कसौटी अपनी जुबानी नहीं बताएँगे। क्योंकि उस पर भी कोई पक्षपात का मुकदमा दायर कर सकता है। इसके लिए हमें चाहिए- एक निष्पक्ष सत्ता! एक स्वतंत्र मत! एक विशुद्ध कंठ! इस भरे संसार में ऐसी गुणवत्ता शायद किसी शास्त्र में नहीं। इसलिए आइए बढ़ते हैं, अपने धार्मिक-ग्रंथों की ओर- वेद, गीता, पुराण, श्री गुरु ग्रंथ साहिब, बार्डबल, कुरान...। पलटते हैं इनके जीवंत पन्नों को। ये ऊँचे-ऊँचे स्वरों में बोलते सुनेंगे। वह भी अटल सत्य! आप उन्हें डराएँ-धमकाएँ या लालच देकर फुसलाएँ- ये तब भी सत्य का भीषण नाद करेंगे। सदा-सदा सत्य बोलेंगे। इसलिए आइए कान लगाकर इन्हें ही सुनें - 'क्या है पूर्ण सद्गुरु की सच्ची कसौटी? उन्हें

जो अखण्ड
उस (प्रभु)
प्रत्यक्ष साक्षात्
वही पूर्ण गुरु
सो
भीतर ईश्वर व
साहिब जी में
नदरि न आव
आपणे जिनि
उन्होंने उस पर
एक
पुकार-पुकार
निकटि करि
बलिहारे जासु
बिखाने की साम
रूप में धारण
कसौटी है।

किसे फुर्सत है भटके हुए को राह दिखाने की,
विश्वास देकर गुमराह करने वाले बहुत मिलेंगे।

बताइए स्वामी जी, जहाँ कदम-कदम पर ऐसे रहकर हैं
वहाँ मुसाफिरों को किस पर एतबार आये?’

सत्य वचन सज्जनों! आपकी यह समस्या सौ फीसदी
जायज है। मगर ज़रा ईमानदारी से सोचें, इस समस्या को खार-पानी
से सींचा किसने? धर्म के बाने में कपटाचार किसकी शह पर
फूला-फूला? देखो, ताली एक हाथ से नहीं बजती। अगर श्रद्धा
ठगी जा रही है, तो इसमें बराबर के जिम्मेदार हैं- हम स्वयं। हमारा
अंधापन! गैर जानकारी या अज्ञानता! बिना बूझे-परखे गुरु धारण
करने की वृत्ति! कोताही तो हमने ही बरती है। फर्ज करें, आपका बेद
सोने के स्थान पर पॉलिश किया हुआ पीतल खरीद लाए। अब ऐसे में
क्या आप सिर्फ सुनार पर दोषारोपण करेंगे? उसे ठगी-कपटी कहकर
सारी सुनार जाति से परहेज करेंगे? भविष्य में सोना खरीदना बंद कर
देंगे? नहीं न! बल्कि अपने बेटे को करारी डाँट पिलाएँगे। उसे बुद्धि
इस्तेमाल करने की सलाह देंगे। खरे सुनार और सोने की परख करना
सिखाएँगे।

ठीक ऐसे ही, प्रभु के नादान प्यारों, आप गुरु सत्ता से बेर न
करें। उनकी परम-उपकारी मंगलकारी दीक्षा से खुद को वंचित न
रखें। झिझक को झिड़क कर आगे बढ़ें और गुरु धारण करें। हाँ, बस
ऐसा करते हुए सजगता बरतें-

बुद्धि
फूल
होर्नि
दरबार या डे
पर कैसे पर
प्रश्न एक बा
किया- 'कृपा
सच्चा है औ
जिज्ञासु को
गई। इस का
दिनों में धन
कहा कि, 'त
छोड़ गए हैं
तुम्हारे पिता
प्रवीण पार
जाओ।' पुत्र
गया। हीरा
उम्मीद लेव
हैं। ताकि ह
धुमा-धुमा
कितने हीरे
विषय में -

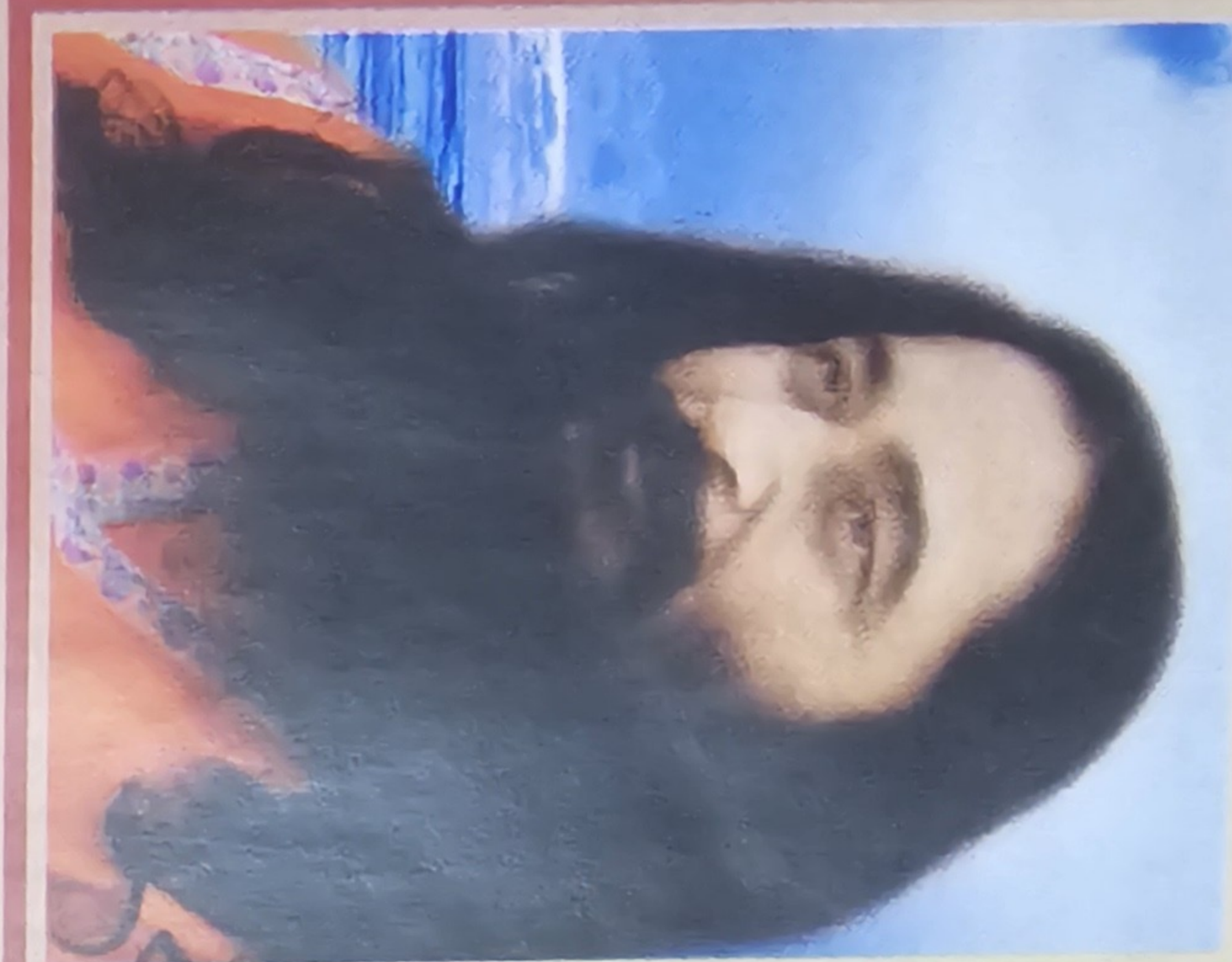
सकते हैं। इसलिए सावधान! इस कसौटी पर भी गुरु धारण करने की भूल न करें।

एक अन्य कसौटी, जिसकी बतियाँ जगाकर हम गुरु टीहते हैं- वह है भीड़! भक्तजनों का समूह! बड़े तार्किक अंदाज़ में तर्क देते हैं- 'स्वामी जी, देखो न बाबा जी के पास कितनी भीड़ है। जनता चक्कर काटती है। दुनिया पीछे लगी है। अरे, कुछ तो होगा ही, वरना क्या ये सब पागल हैं?' वाह! क्या कसौटी है? क्या तर्कपूर्ण सोच है हमारी? बलिहारी! शायद यही शानदार तर्क किसी श्रद्धालु ने कबीरदास जी के सामने भी रखे होंगे। तभी तो उन्होंने यह बिंदास झिड़की देते हुए कहा-

फूटी आँख विवेक की, जाने न संत असंत।
जिसके पीछे दस बीस, लोग कहें महंत॥

सोचो सज्जनों! भीड़ संतत्व का मापदंड कैसे हो सकती है? क्योंकि जमात इकट्ठी करने में क्या दुश्चारी? कौन सा मोर्चा सहालना पड़ता है? अगर कोई भी बाबा जी मनभावन अदाएँ या फिर कुछ हटके स्वांग रचने में माहिर हों, तो वहाँ आसानी से भीड़ जुट सकती है। कोई बड़ी बात नहीं।

मगर ध्यान रखो! 'भीड़' और 'भेड़ चाल' में कुछ ख़ास अंतर नहीं होता। एक बार एक अध्यापक ने अपने छात्रों को भेड़ें दिखाते हुए पूछा- 'देखो बच्चों, ये बीस भेड़ें हैं। इनमें से अगर एक भेड़ में गिर जाए, तो कितनी बचेंगी?' बच्चों ने झट उत्तर दिया-



श्री आनुलोष महाराज जी

देखो, ताली एक हाथ से नहीं बजती। अगर श्रद्धाएँ ठगी जा रही हैं, तो इसमें बराबर के जिम्मेदार हैं- हम स्वयं! हमारी गैर जानकारी या अज्ञानता! बिना बूझे-परखे गुरु धारण करने की वृत्ति! फर्ज करें, आपका बेटा सोने के स्थान पर पोलिश किया हुआ पीतल खरीद लाए। अब ऐसे में क्या आप सिर्फ सुनार को ठगी-कपटी कहकर सारी सुनार जाति से परहेज़ करेंगे? भविष्य में सोना खरीदना बंद कर देंगे? नहीं न! बल्कि अपने बेटे को करारी डाँट पिलाएँगे। उसे खरे सुनार और सोने की परख करना सिखाएँगे।

ठीक ऐसे ही, प्रभु के नादान प्यारों, आप गुरु सत्ता से बैर न करें। उनकी परम मंगलकारी दीक्षा से खुद को वंचित न रखें। झिझक को झिझक कर आगे बढ़ें और गुरु धारण करें। हाँ, बस ऐसा करते हुए सजगता बरतें।

दिव्य ज्योति जाग्रति संस्थान

प्लॉट नं० 3, पुष्पांजलि एन्कलेव के पीछे, पीतमपुरा एक्स०, दिल्ली-34
फोन : 91-11-27020666/4555, 27032727 www.divyajyoti.org



उस पर भी ईमान न लाएँ। सो आइए उससे पहले, हम उन सब मनगढ़ंत कसौटियों को बाँचेंगे, जो वर्तमान में प्रचलित हैं। आज के ज्ञानेच्छुक जिज्ञासु इन्हीं की ऐनक चढ़ाकर गुरु का चयन करते हैं।

सबसे पहला चिह्न जो हमारी नज़र को कायल करता है, वह है— सन्यासी वेश। गेरुआ चोला या फिर श्वेत उजला सा लिबास। तिलक, चंदन, रूद्राक्ष आदि अलंकार। बस इन पर दृष्टि पड़ी नहीं कि कुछ महानुभावों के शीश श्रद्धा भाव से झुक जाते हैं। भई, थोड़ा सा तो 'बुद्धि' नामक यंत्र का उपयोग करो। सोचो कि ऐसा करना कितना न्यायसंगत है? रामचरितमानस में संदर्भानुकूल तीन प्रसंगों का वर्णन है। तीनों में तीन पात्र भगवा वेश पर मंत्रमुग्ध हुए। बालकाण्ड कहता है कि राजा प्रतापभानु वन में भटक रहे थे। राह बीच एक कुटीर मिली। कुटीर के बाहर गैरिक में लिपटा, जोगिया वेशधारी एक शख्स बैठा था। बस प्रतापभानु जी की तो आँखों की बतियाँ जग गईं। उस भगवाधारी को महामुनि मान बैठे। गोस्वामी जी ने भी उनकी इस मनोदशा पर मीठा अट्टहास किया— देखि सुबेष महामुनि जाना-अर्थात् मात्र सुन्दर सन्यासी वेश देखकर महामुनि मान लिया। फलस्वरूप क्या दुर्गति हुई? ठगा गया न! दूसरा पात्र— जगतजननी माँ सीता हैं। वे भी रावण के केसरिया पर सम्मोहित हुईं। परिणाम क्या हुआ? बताना क्या, यह तो जगज्जाहिर ही है। यहाँ सीता जी श्रद्धा—सबूरी की प्रतीक हैं। प्रसंग संकेतात्मक है कि जब-जब भी श्रद्धा की आँखें मात्र गेरुए पर उलझेंगी, तो वह हर ली जाएगी। तीसरे पात्र हमारे बजरंग बलि हनुमान हैं। वे भी माला कंठीधारी

इतना बता दो- 'Then what is the difference between a Jadugar and a Sadguru?' फिर एक जादूगर और सद्गुरु में अंतर कितना बचा? आपने तो तंतर-मंतर से लैसे एक तांत्रिक और परमतारिणी ब्रह्मविद्या देने वाले सद्गुरु को एक ही धरातल पर लाकर खड़ा कर दिया! क्या यह आज तक की पूर्ण गुरु-सत्ताओं और स्वयं अपनी आत्मा के प्रति भी अन्यायकारी नहीं? मनन करेंगे, तो कहेंगे- 'जो बिल्कुल!' साथ ही एक बात और बता दूँ- ऐसे चमत्कारी बाबाओं से अच्छे तो जादूगर ही हैं, जो ईमानदारी से साफ-साफ कहते हैं कि जी, यह तो बस हाथ की सफाई है। महज जादू है। कोई दिव्य शक्ति से किया गया चमत्कार नहीं।

पाँचवे किस्म के महानुभाव तो सबसे निराले हैं। वे तो कसौटी-कसौटी से ऊपर की बात करते हैं। उनकी धारणा है कि- 'भाई, सब ठीक हैं। सब गुरु अच्छी बातें और कल्याण का रास्ता ही तो सुझाते हैं। इसलिए हमारा तो सभी को प्रणाम है। क्या करना ज्यादा सोच के! परख-वरख करके!' अब यह जो धारणा है, बड़ी खतरनाक है। हमारा 'सभी ठीक है' वाला- यह रवैया ही अध्यात्म की जड़ों पर कुठाराघात करता है। समाज की ज़मीन पर ज़हरीली खर-पतवार उगाने का अवसर देता है। हमारी इसी मूक-बधिर मानसिकता से बनावटी और पाखंडी तत्व सिर उठा और पैर जमा लेते हैं। महिमावान गुरु-पद पर बेधड़क बैठकर भोली-भाली जनता की श्रद्धा को ठगते व लूटते हैं।

पहचानने का सटीक मापदंड?’

शास्त्रों के स्फुट बोल हैं—

अखण्ड मंडलाकारं व्याप्तं येन चराचरं।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः॥

जो अखण्ड है, सकल ब्रह्माण्ड में समाया है, चर-अचर में तरंगित है, उस (प्रभु) के तत्त्वरूप का जो मुझे दर्शन करा दे; भीतर प्रकट कर प्रत्यक्ष साक्षात्कार करा दे— उन गुरु को मेरा शत-शत नमन है अर्थात् वही पूर्ण गुरु है।

सो सुध लें सज्जनो! पूर्ण गुरु वही हैं, जो आपको आपके भीतर ईश्वर का साक्षात् दर्शन करा दें— प्रत्यक्ष दिखा दें। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में तो बिल्कुल स्पष्ट शैली में समझाया गया— जि पुरुखु नदरि न आवई तिस का किआ करि कहिआ जाइ। बलिहारी गुरु आपणे जिनि हिरदै दिता दिखाइ॥ बलिहारी है उस गुरु को, जो उन्होंने उस परम पुरुष को हृदय के भीतर दिखा दिया।

एक बार नहीं, सैंकड़ों बार इस पवित्र ग्रंथ ने यही बात पुकार-पुकार कर कही— ‘पूरे गुरु का सुनि उपदेसु। पारब्रह्म मु निकटि करि पेखु’..... ‘नानक देखि दिखाईऐ हउ सद बलिहारे जासु।’ जो महापुरुष स्वयं परमतत्त्व को देखकर हमें दिखाने की सामर्थ्य रखते हैं, उन पर वारि-वारि जाओ। उन्हें ही गुरु रूप में धारण करो। केवल यही उनके पूर्णत्व का प्रमाण है। खरी कसौटी है।

ने स्वामी रामानन्द जी से ब्रह्मज्ञान प्राप्त किया था।

बस समझ लो! सृष्टि के आदिकाल से वर्तमान तक जिसने भी ईश्वर को पाया, गुरु के सान्निध्य में ही पाया। नरेन्द्र-रामकृष्ण, दयानन्द-विरजानन्द, जनक-अष्टावक्र, एकनाथ-जनार्दन, प्लेटो-सुकरात आदि जोड़े, इसी बात को सिद्ध करते हैं। अब जब इन सभी ने इस हिदायत को कान दिए तो, बन्धुओं, हम कैसे अनसुना कर सकते हैं? कैसे इस अटल नियम से हटकर अपना अलग राग अलाप सकते हैं?

हो सकता है, इन दलीलों को सुनकर अब आपका दिल कुछ मोम हुआ हो। गुरु-शरणागति का नेक इरादा आपके मन-अम्बर पर कौंधा हो। मगर 99 प्रतिशत सम्भावना है कि इस इरादे को झट ग्रहण लग जाएगा। आपका यह नवजात हौसला पस्त हो जाएगा। आप कहें- 'स्वामी जी, दलीलें निस्संदेह पुष्टा हैं। मगर इनकी तामील में बड़ी भारी समस्या है। हम जैसे ही इनसे गद्गद होकर कदम आगे बढ़ाते हैं, हमारे मन के पर्दे पर अखबारों की कुछ सुखियाँ उमड़ आती हैं। चल्चित्रों के कुछ दृश्य घूम जाते हैं। इनमें उन सब स्कैंडलों या काण्डों की झलकियाँ हैं, जिनके नायक चोर, डाकू, ठग या लुटेरे नहीं, बल्कि समाज के नामी-गिरामी धर्मगुरु हैं। ये अनैतिकता और चरित्रहीनता के ज्वलंत उदाहरण बने दीखते हैं।

बिना दर्द भी आह भरने वाले बहुत मिलेंगे,
धर्म के नाम पर गुनाह करने वाले बहुत मिलेंगे,

धरि कै हथु जीउ॥ भाव सतगुरु ने नाम-दीक्षा के वक्त मस्तक पर हाथ धरा। भीतर आदिनाम प्रकट किया। साथ ही परम पुरुष को प्रकट कर दिखा दिया। तत्क्षण! उसी पल! जी हौं, दीक्षा के समय ही! जगद्गुरु श्री कृष्ण ने अर्जुन से क्या लारे-लपे लगाए थे- 'देख धनुर्धर! हम युद्ध-क्षेत्र में खड़े हैं। इसलिए अब तो मैं तुझे नाम-दीक्षा दे रहा हूँ। परन्तु युद्ध-उपरांत तू किसी कुटीर या कंदरा में इसका जप के अभ्यास करना। तब एक दिन तू हमारे परमतत्त्व रूप को देख पाएगा?' नहीं, प्रत्युत वहीं, जलती समरभूमि पर अपने शिष्य को चतुर्भुज रूप, विराट स्वरूप, कोटि-कोटि सूर्य, ब्रह्माण्ड-सबका प्रत्यक्ष साक्षात्कार कराया था। हम हर गवाही से पूर्व जिस गीता की सौगंध खाते हैं, वह खुद गवाह रूप में कहती है- दिव्यं ददामि ते चक्षुः पश्य मे योगमैश्वरम्- हे तात्! मैं तुझे दिव्य दृष्टि प्रदान करता हूँ। तू इसी क्षण मेरे योगैश्वर्य को देखा।

इसलिए सज्जनो! चेतो! आपमें भर दी गई ये दोनों पंक्तियाँ केवल कोरे दावे हैं। खोखले दिलासे हैं। अगर आपके बाबा जी ने नाम-दीक्षा के समय ही प्रभु का नूरानी चमकार, अखण्ड ज्योति आदि अलौकिक दर्शन आपको नहीं कराए, तो सावधान! आगे भी नहीं करा पाएँगे। 'एक दिन' की झूठी आस में कहीं समय का चक्का नहीँ करा पाएँगे। ज्यादा आगे न दौड़ जाए। यह अफसोस तिल-तिल करके न जलाए-

खेलना जब उनको तूफानों से आता ही न था,
फिर वो कश्ती के हमारी नाखुदा क्यों बन गए।

अंदाज़ में, साधारण शैली में बतियाया करते थे। पर उनकी इस सीधी-साधी बोली में भी ग्रंथों का सार भरा होता था। विवेकानंद का कहना था कि उन्होंने वेदांत के गूढ़ अर्थ अपने गुरु परमहंस की सहज-सरल वाणी से ही समझे हैं।

लेकिन आज तो उल्टी ही धारा बह रही है। इन तथाकथित गुरुओं के पास केवल शब्द ही शब्द हैं। समझने के लिए आइए 'बहेलिया चरितावली' का मंथन करते हैं। ये बहेलिया महाराज सिर से पाँव तलक फूल-पत्तों-लताओं को ओढ़ लेते हैं। एक हरे-भरे वृक्ष का छद्म वेश धर लेते हैं। फिर उसमें एक गोंद पुता बाँस भी छिपा देते हैं। भोले पंछी उनकी छाँवदार हरियाली पर रीझ उठते हैं। चहकते हुए उड़ आते हैं और चिपक जाते हैं बाँस से। गोस्वामी जी ने विनय पत्रिका में इस प्रसंग की बड़ी सटीक तुर्के जोड़ी है। फरमाते हैं-

बिरची हरिभगति को बेब बर टाटिका,

कपट-दल हरित पल्लनि छोवौं।

जैसे कपटी बहेलिया हरित वृक्ष का रूप धर लेता है, वैसे ही कुछ गुरुआ वेशधारी तथाकथित संत महंत हैं।

नाम लागि लाइ लासा ललित बचन कहि,

व्याध ज्यों बिषय-बिहंगनि बझावौं।

ज्यों गोंद पुता बाँस चहकते पंछियों को फाँसता है, ठीक वैसे ही इन संतो-महंतों की मीठी-मधुर शब्दावली है। वह भी भोले और सहज विश्वासी जनों को अपने कड़े जाल में जकड़ लेती है।

इस प्रकार धनाभाव के कारण तुम एक-एक हीरा बेचने लगोगे, तो एक दिन तो वे सब खत्म हो जाएँगे। क्यों न मैं तुम्हें हीरों की परख करना सिखा दूँ? इससे तुम स्वयं ही एक जौहरी बन सकोगे। अपना व्यवसाय शुरू कर पाओगे। तुम्हारे पिता की मृश्म पर बहुत मेहरबानियाँ रही हैं। ऐसा करके मैं भी उनके ऋण से कुछ मुक्त हो पाऊँगा।' बेटा तत्क्षण मान गया। उसके लिए इससे अच्छी बात और हो भी क्या सकती थी? कुछ ही दिनों में उस सज्जन की शागिर्दी में वह उत्तमकोटि का पारखी बन गया।

उसके बाद घर लौटा और लौटते ही संदूक खोला। एक हीरा को उठाया। नज़र के पास लाकर परीक्षण किया। झल्ला कर उसे एक ओर फेंक दिया। फिर दूसरा उठाया, तीसरा उठाया... एक-एक को नज़र भर देखा और इधर-उधर फेंक दिया। माँ हैरान-पेशान। ज़मीन पर बिखरे हीरे समेटते हुए ज़ोर-ज़ोर से पुत्र को डाँटने लगी- 'मूर्ख, तेरा दिमाग ठिकाने पर है कि नहीं? अपने पिता की जीवन-पूँजी इस तरह फेंक रहा है।' पुत्र ने कुछ नहीं सुना। संदूक खाली करता गया। अंत में, सारे हीरे फेंककर वापिस अपने पिता के मित्र के पास पहुँचा। उनसे शिकायत भरे लहज़े में कहा, 'आपने ऐसा क्यों किया चाचा जी? आप तो पहली बार में ही समझ गए थे कि जिसे मैं हीरा समझकर आपके पास लाया हूँ, वह सिर्फ एक कौँच का टुकड़ा है। फिर भी आपने मुझे यह वास्तविकता क्यों नहीं बताई?'

सज्जन मित्र ने बड़े पते की बात कही- 'बेटे, यदि मैं उस समय इस बात को प्रकट कर देता, तो तुम्हारी भावनाओं को ठेस

कि तुम्हें क्या बताऊँ। हमारे स्मिर के सबसे ऊपर के भाग (गगन मंडल) में एक अद्भुत कुँआ है। आश्चर्य की बात तो यह है कि इसमें से निरंतर अपने आप ही अमृत झरता रहता है। गुरु कृपा से मैंने इस अमृत का पान किया। इसी अनुभव के विषय में कबीर दास जी भी कहते हैं- 'बिना पियाला अम्रित अंचवै।' अर्थात् वहाँ (अंतर्जगत) में प्याला नहीं है। वह ऐसा अनोखा जगत है जहाँ बिना प्याले के ही अमृत पिया जाता है।

ब्रह्मानंद जी आगे बताते हैं- 'बिना बजाए निशदिन...' अर्थात् मैंने गुरु कृपा से अपने भीतर हर पल, हर क्षण ध्वनित होता अनहद नाद भी सुना। कमाल की बात तो यह है कि इस नाद को कोई नहीं बजाता। यह बिना बजाए, अपने आप लगातार बज रहा है। कबीर जी भी कहते हैं- 'अनबोला नित गावे'। वहाँ वाक्य नहीं है, इन्द्रियाँ नहीं हैं, वहाँ स्वतः ही गायन उठता है। कभी धंटा बजता है, तो कभी बाँसुरी, तो कभी-कभी शंख का दिव्य नाद गूँजता है। है न आश्चर्य! बाहरी जगत के संगीत की तो फिर भी हद (सीमा) है, लेकिन अन्तर्जगत का संगीत तो अनहद है, जो केवल एक पूर्ण गुरु ही हमें सुना सकते हैं।

अंतिम पंक्ति में ब्रह्मानंद जी बताते हैं- 'बिन धरती...' 'यू तो मंदिरों के दर्शन सभी करते हैं। पर मैंने गुरु महिमा से जो मंदिर अपने भीतर देखा, वह तो अत्यंत विचित्र है। अन्तर्जगत का यह मंदिर बिना धरती के ही खड़ा है। इसमें अखण्ड ज्योति दिन-रात जल रही है। गजब की बात तो यह है कि यह ज्योति बिना घी, दीये और बाती

दिव्य ज्योति जाग्रति संस्थान

(विभिन्न शाखाओं के पते)

मुख्य भवन

प्लॉट नं० 3, पुष्पांजलि एन्कलेव के पीछे, पीतमपुरा एक्स०, परवाना रोड,
दिल्ली-110034 फोन : 011 - 27020666, 27024555

ई-मेल : info@divyajyoti.org **वैबसाईट** : www.divyajyoti.org

दिल्ली : ■ सी सी-29, नेहरू एन्कलेव, पारस सिनेमा के सामने, दिल्ली-19 फोन : 26295656 ■ के जी-1/357, विकास पुरी, दिल्ली-18 फोन : 25531628 ■ प्लाट-26, विश्वास नगर एक्स०, नजदीक कड़कड़ूमा कोर्ट, यमुना पार, दिल्ली-93 फोन : 22308400 ■ जे-119, ग्राउण्ड फ्लोर, वेस्ट पटेल नगर, दिल्ली-8 फोन : 25889944 ■ ई-121-122, सेक्टर-1, महालक्ष्मी अपार्टमेंट के सामने, द्वारका, दिल्ली-45 फोन : 25080888 ■ ई-1/11/33, एम.आई.जी. फ्लैट, सेक्टर-15, रोहिणी, दिल्ली-85 फोन : 27298222 **पंजाब :** ■ नकोदर रोड, नूरमहल, जिला-जालन्धर फोन : 01826-242913/243913 **ई-मेल** : djjsnm@rediffmail.com ■ प्रेम कॉलोनी, डकाला रोड, नजदीक माई जी की सराय, पटियाला-147001 फोन : 0175-2321079 ■ म.नं. 4914, गली-4, मोहन नगर, सुल्तानबिंद रोड, अमृतसर फोन : 0183-2582178 ■ ई-12/847, गली-1, थापर नगर, करतार कोल्ड स्टोर के पीछे, जालन्धर बार्डपास, लुधियाना फोन : 0161-2746326 ■ ग्राम- डबवाली मलको की, तहसील-मलोट, जिला-मुक्तसर फोन : 01637-276503/276536 ■ दिव्य ज्योति नगर, फाजिल्का अबोहर रोड, नजदीक टी.वी. टॉवर, फाजिल्का, जिला-फिरोजपुर फोन : 01638-260472 **चण्डीगढ़ :** 496-ए, सेक्टर-61, नजदीक फेस-7, चण्डीगढ़ फोन : 0172-2662001 **उत्तरांचल :** ■ 70, इंदिरा गांधी मार्ग, सत्यशील गैस गोदाम के सामने, निरंजनपुर, देहरादून फोन : 0135-2625577 ■ म.नं.-55, बार्ड-25, लक्ष्मी नारायण मोहल्ला, दूरिस्ट ऑफिस के पास, पौड़ी गढ़वाल फोन : 01368-223451 ■ रई थारा, धारचुला रोड, नजदीक हनुमान मूर्ति, पिथौरागढ़ फोन : 05964-224692 **उत्तर प्रदेश :** एच.आई.जी.प्लाट नं.-23, ए.डी.ए कॉलोनी, प्रीतम नगर, इलाहाबाद-211011 फोन : 0532-2637522, 9415351156 ■ 5/301, कृष्णा कुंज, फायर ब्रिगेड कॉलोनी, गूलर रोड, अलीगढ़-202001 फोन : 0571-2521227 ■ एच.आई.जी.प्लाट नं.-सी-318, सिद्धार्थ नगर कॉलोनी, जी.डी.ए. तारामंडल के पास, गोरखपुर-273001 फोन :

के खालिसपन की क्या पहचान? और फिर इसकी क्या गारंटी कि वर्तमान के पूर्ण गुरु केशरिया ही धारण करते हों? वे तो श्वेत भी पहन सकते हैं, लाल-गुलाबी भी, पीला-नीला या अन्य कोई रंग भी। जरूरी नहीं, चोगा ही पहने। वे कुर्ता-पाजामी या ओवरकोट भी धारण कर सकते हैं। इसी बात पर उदाहरण लो। प्रभु श्री कृष्ण जगद्गुरु थे। मगर उनकी छवि कैसी थी? बाँकी, मोर मुकुटधारी। राजा जनक भी अपने समय के पूर्ण गुरु थे। मगर वेश? राजसी! संत सुजाता ने साक्षात् कलियुगावतार महात्मा बुद्ध को दीक्षा दी। परन्तु किस वेष में? बकरियाँ चराती एक साधारण ग्वालिन के रूप में। सो मेरे बन्धुओं-सूरत को छोड़ो, सीरत की कद्र करो। संत वेश पर नहीं, संतत्व पर बलिहार जाओ।

आइए अब परखें दूसरी कसौटी, जो अधिकतर सयानों की पसंद है- लच्छेदार, सरस व्याख्यान या कथाएँ बाँचना। एक ओर तन पर फबता गेरुआ। दूसरी ओर मुख से झरती ललित शैली। शब्द चातुर्य! अहाहा! सोने पे सुहागा! कुछ श्रोतागण तो अपने कपड़ों में ही नहीं समाते। द्रवित हो कथावाचक महाराज के चरण धीने को व्याकुल हो उठते हैं। हम यह नहीं कहते कि कथा बाँचना निन्दनीय है या फिर इन्हें बाँचने वाले कथाकार वंदनीय नहीं। यहाँ तो सीधा मुद्दा यह है कि क्या यह बाँचन या किस्साखानी गुरुत्व की वाजिब कसौटी है?

अगर ऐसा होता, तो इतिहास कदापि स्वामी रामकृष्ण परमहंस को गुरु पद पर आसीन नहीं करता। वे बिल्कुल अदृढ़

अंद सीध कह सह गुरुअ 'बहेति से पाँत का छ देते हैं। हुए उ पत्रिका जैसे क गेरुआ त कैसे ही और सह

फोन : 0177-2620587 **छत्तीसगढ़ :** डॉ. सुशीला बाड़ा, उड़िया पाड़ा, सरायपाली, जिला-महासमुंद्र **फोन :** 09425521416, 09926150728 **आन्ध्र प्रदेश :** मकान नं. 1-30-142, नूतन कॉलोनी, न्यू बोइन पल्ली, सिकंदराबाद, हैदराबाद **फोन :** 09441796761 **तमिलनाडु :** प्लॉट नं. 12, देवर नगर, मिट्टनमल्ली, ए एफ एस, आवड़ी, चैन्नई-600055 **फोन :** 9840627278, 044-26841947

ABROAD : BAHREEN : ■ Shop No. 289, Road No. 1113,

Salmaniya Manama, Bahreen, 00973-9605362 **CANADA:** ■ 24 Taber Road Toronto Ontario M9W-3A5 Canada, 416-746-7100

■ D.J.S. Hamilton, 1441 Barton Street East, Hamilton, Ontario, Canada, L8H 2W7, 905- 545-9178 ■ 7 Madewini soesdyke, East Bank Demerara, Guyana 592-261-5409, 592-220-9085 **DUBAI :**

■ Bhawana Restaurant, Meena Bazar, Dubai, 00971507378104 **GERMANY:** ■ Divya Jyoti, Nagelsweg-32, 20097-Hamburg,

Germany, 00494055621254/ 00491791396849 **GREECE :** ■

Eleopatre Alexion, Stampia, Messina 93, P B No. 64, Koropi-19400, Athens, Greece, 0030-6944134445, 6939478292 **ITALY :** ■ Tenuta,

Mirasole, C. Formale, Cori 04010, Latina, Italy, 0039-06-9677159

LEBANON : ■ P B No. 80852, Boury Hammud, Dora,

Lebanon, 00961-452-0849 **NEPAL :** ■ Village: Dhungri Kholra Gavisa, Ward No.5, P.O. Harion, Distt. Sarlai, Nepal

PHILIPPINES : ■ 2511-BB, Galves Compound Aurora, St. Passay, City Malina, Philippines, 0063-078-8877812

SWITZERLAND: ■ Bruggacker Str. 26, 8052 Glattburgg,

Switzerland, 0041-18365707 **UK :** ■ Flat No. 2, Westway Court, Ealing Road, Northolt, Middlesex - UB5 6AF, U.K, 00208-841-

1993 **USA:** ■ 613 Oregon Street, Fairfield, California 94533, USA,

707-399-7670 ■ 5880 Waterwash Way, Sacramento, California

95823, USA, 916-422-6268 ■ 17845 Orna Drive, Granada Hills,

California 91344, USA ■ 4925 Miniwawa Way, Fresno, California

93725, USA, 559-268-0719, 559-304-6481 ■ 33-30, 146 Street

Flushing, New York- 11354, USA, 718-463-3710 ■ 83-05

Homelawn Street, Jamaica Estates, New York-11432, 718-298-5545,

516-807-6695(M) (शेष विदेशी व भारत की शाखाओं के पते व फोन नं. आप

संस्थान की वेबसाइट- www.divyajyoti.org से प्राप्त कर सकते हैं।)

धार्मिकता

केवल धर्म में इतना सामर्थ्य है, जो एक व्यक्ति का पूर्ण रूपांतरण कर सकता है। कारण कि जब धर्म प्रकट होता है, तो अपने दस लक्षण भी मनुष्य के भीतर प्रतिष्ठित करता है। ये लक्षण हैं- धैर्य, क्षमा, संयम, अस्तेय, पवित्रता, इन्द्रिय-निग्रह, शुद्ध बुद्धि, सत्य, उत्तम विद्या व अक्रोध। स्वाभाविक है, जब मनुष्य में ये लक्षण प्रतिष्ठित होंगे, तो समाज, राष्ट्र और संपूर्ण विश्व स्वतः ही सुंदर, आदर्श एवं शांतमय दिखेगा। इसीलिए आवश्यक है कि आज का अशांत मनुष्य धार्मिक हो।

वैसे तो, आज अधिकांश मनुष्य ईश्वर को मानते हैं व भिन्न-भिन्न तरीकों से पूजा-अर्चना करते हैं। नित्यप्रति सत्संग कथाएँ सुनते व धार्मिक ग्रंथों का पठन-पाठन भी करते हैं। और ऐसा करके सोचते हैं कि वे धार्मिक हो गए। परन्तु यदि वे धार्मिक हैं, तो उनके व्यक्तित्व में धर्म के दस लक्षण क्यों दृष्टिगोचर नहीं हो रहे? समाज अनैतिकता का खुला रंगमंच क्यों बना दिख रहा है?

इसलिए समय का यक्ष प्रश्न है कि मनुष्य के भीतर धर्म के दस लक्षण कैसे प्रकट हों? वह किस प्रकार सही अर्थों में धार्मिक बने? वास्तव में धर्म है क्या? स्वामी विवेकानंद ने कहा- 'धर्म ईश्वर की प्रत्यक्ष अनुभूति है'। ईश्वर की यह साक्षात् अनुभूति प्रदान कर यदि कोई सच्चे अर्थों में हमें धार्मिक बना सकता है, तो वे हैं- समय के पूर्ण गुरु, जिन्हें संत, महापुरुष, कामिल मुर्शिद आदि भी कहा गया है।

पर आज ऐसे पूर्ण गुरु हैं कहाँ? जिज्ञासुओं के लिए यह

हीरा परखे जौहरी, शब्द को परखे साध।
जो कोई परखे साध को, ता का मता अगाध॥

यहाँ हम आपको वह 'अगाध मति' अर्थात् विवेक देते हैं,
जिससे आप स्वयं सच्चे साधु (गुरु) की परख कर सकें।

- श्री आशुतोष महाराज जी

Copyright © 2008

दिव्य ज्योति जाग्रति संस्थान (रजि०)

सर्वाधिकार सुरक्षित

तृतीय संस्करण - 2008

GURU KYON AUR KAISA DHARAN KAREN?
Published by :
DIVYA JYOTI JAGRATI SANSTHAN (Regd.)
Plot No. 3, Pkt. OCF, Behind Pushpanjali Enclave,
Pitampura Extension, Delhi - 110 034, INDIA
Printed by :
Excel Printers Pvt. Ltd.
C-206, Naraina Industrial Area, Phase-1, Delhi-110 028, INDIA

केवल

रूपांतरण क
दस लक्षण
क्षमा, संयम
विद्या व अ
होंगे, तो स
शांतमय दि
धार्मिक हो

भिन्न-भिन्न
सुनते व
सोचते हैं
व्यक्तिगत
अनैतिक

दस लक्षण
बने? व
की प्र
कर य
समय
कहा

बुलबुले नादाँ ज़रा रंगे-चमन से होशियार
फूल की सूरत बनाये सैंकड़ों सैयाद बैठे हैं।

होशियार रहें! चौकन्ना रहें, जागरूक रहें। जिस भी आश्रम, दरबार या डेरे में जाएँ, तो अमुक गुरु को भली प्रकार जाँचे-परखें। पर कैसे परख करेंगे कि कौन सच्चा है और कौन बनावटी? यही प्रश्न एक बार किसी जिज्ञासु ने श्री गुरु आशुतोष महाराज जी से किया- 'कृपया आप ही बताएँ कि वर्तमान समाज में कौन-सा गुरु सच्चा है और कौन-सा झूठा?' उत्तरस्वरूप श्री महाराज जी ने उस जिज्ञासु को एक दृष्टांत सुनाया- एक बार एक जौहरी की मृत्यु हो गई। इस कारण उसकी पत्नी और पुत्र एकदम असहाय हो गए। कुछ दिनों में धन का अभाव भी होने लगा। विधवा माँ ने अपने पुत्र से कहा कि, 'देखो बेटे, तुम्हारे पिता हीरों से भरी एक संदूक हमारे लिए छोड़ गए हैं। तुम इसमें से एक हीरा बेचकर कुछ धन ले आओ। मैं तुम्हारे पिता के एक मित्र को जानती हूँ। वे बहुत ईमानदार हैं। हीरों के प्रवीण पारखी हैं। वे उचित दाम देंगे। इसलिए उन्हीं के पास चले जाओ।' पुत्र अपनी माँ के निर्देशानुसार पिता के मित्र के पास पहुँच गया। हीरा दिखाकर उनसे बोला, 'चाचा जी, मैं आपके पास बड़ी उम्मीद लेकर आया हूँ। कृपया आप इस हीरे का मुझे उचित मूल्य दें। ताकि हमारा गुज़र-बसर हो सके।' मित्र ने बड़े ध्यान से हीरे को घुमा-घुमा कर देखा। फिर बड़ी गम्भीर वाणी में बोला, 'बेटे, ऐसे कितने हीरे हैं तुम्हारे पास?' युवक ने घर में रखी उस भरी संदूक के विषय में बता दिया। यह सुनकर मित्र कुछ सोचते हुए बोला, 'यदि

बलिहारी है, ऐसी बेमिसाल लगन की! मगर इसके बावजूद इन्हें एक बार अपने ही इष्ट भगवान नारायण से करारी झिड़की मिली। जानते हैं क्यों? पद्मपुराण में इसका स्पष्ट वर्णन है। नारद जी प्रतिदिन विष्णुधाम जाया करते थे। वहाँ ब्रह्मविचारों को सप्रेम सुनते और लौट आते। पर एक बार उन्होंने देख लिया कि सभा-विसर्जन के बाद प्रभु उनके स्थान को लिपवा रहे हैं। भीतर बड़ा कौतुहल हुआ। श्री भगवान से कारण बताने की याचना की। प्रभु बिना लाग लपेट के एकदम खरा बोले- ‘**अवैष्णवास्तु ये विप्राः चाण्डालादऽधमाः स्मृताः** - जान लो नारद, महापाण्डित्य से अलंकृत विद्वत ब्राह्मण भी यदि निगुरा है, तो वह अभक्त है। चाण्डाल से भी नीच अधम है। हे नारद, गुरु धारण न करने के कारण तुम भी उसी श्रेणी में आते हो। अतः जहाँ बैठते हो, वह स्थान अपावन हो जाता है। यही कारण है कि हम प्रतिदिन तुम्हारे गमन के बाद उसे लिपवाया करते हैं।’

नारद जी ने ज्यों ही यह सुना, उनकी तो हवाइयां उड़ गईं। साँसें खाली पिंजरे की तरह सुनसान हो उठीं। सारी चहक गायब! आखिर हारकर अपने भाई सनत्कुमार को सारी समस्या बताई। भाई सनत् ने थोड़ी मसखरी की कि- ‘नारद, त्रैलोक्य में तुम्हारी विद्वता और भक्ति का डंका बजता है। फिर हृदयांगन में कोई तान क्यों नहीं है?’ नारद भीगे स्वर में बोले- ‘सुनो भाई! हकीकत तो यह है कि ग्रंथादि में हमने पकवानों की ढेर सारी विधियाँ पढ़ी हैं। व्यंजनों का नाम रटते-रटते जिह्वा चिसी है। पर अन्न का एक दाना भी हमारे पेट में नहीं गया। हम क्षुधा से अधमरे हो रहे हैं।’ सनत् मुस्कुरा दिए। फिर

उन सब आज के करते हैं।

कालनेमि के चक्रव्यूह में फँसते-फँसते बचे।
एक बार किसी भगवद्प्रेमी ने स्वामी रामतीर्थ से पूछा-
'क्या अग्नि के रंग वाले कपड़े पहनने से कोई साधु बन जाता है?'
प्रत्युत्तर में रामतीर्थ जी बोले- 'साधु तो वह है, जिसके भीतर ज्ञान की अग्नि ऐसे भड़क रही हो, कि सारे संसार को उसकी प्रकाश रश्मियों से उजाला प्राप्त हो और ईश्वर की ओर बढ़ने का मार्ग दिखाई पड़ जाए। यदि ऐसा नहीं है तो वह भगवा वेशधारी सिर्फ गीला ईंधन है, जो धुँआ ही धुँआ कर रहा है व जिससे सब लोगों की नाक में दम हो रहा है।' संत रविदास जी ने भी जिज्ञासु वर्ग को चेतावनी दी-

माथे तिलक हाथ जप माला,
जग ठगने कूँ स्वांग बनाया।

अर्थात् बाह्यशृंगार व वेश को कभी संत को परखने की कसौटी मत मान लेना, क्योंकि माथे पर त्रिपुण्ड सजाकर, हाथ में जपमाला लेकर, साधु का वेश धरकर कुछ लोग बड़े स्वांग रचते हैं। पर उनकी मंशा केवल मात्र जग ठगने की है।

सो सज्जनो! समझो, हर गेरुआ बाना संतत्व का घर नहीं। इसलिए गेरुआ या भगवा वेश गुरुत्व की खरी कसौटी नहीं हो सकता। क्या आप काला रंग या वेश देखकर हर कौए को कोयल मान लेंगे? कड़वी तुमड़ी गोल-गोल और नारंगी रंग की होती है। तो क्या आप उसे संतरा मानकर खाने लगेंगे? बताइए? खाली वेश किसी

09451563959, 09336848447 ■ ए-3, गली नं. 2, सर्वोदय कॉलोनी, आई.टी.आई. के पीछे, मेरठ-250001 फ़ोन : 0121-2950129 बिहार : सतर कटैया, गाँव-पदमपुर, नजदीक पंचगाछिया रेलवे स्टेशन, जिला-सहरसा फ़ोन : 9431440344, 9934455904, 06478-282706 हरियाणा : ■ आमीन रोड, कंग फ़ार्म, नजदीक होम्योपैथिक केन्द्री, कुरुक्षेत्र फ़ोन : 01744-324444 ■ सी-59, अशोका एन्कलेव, पार्ट-2, सैक्टर-37, फरीदाबाद फ़ोन : 95129-2274020 ■ कोठी नं. 891, सेक्टर-17, हुड्डा कॉलोनी, जगाधरी, यमुनानगर फ़ोन : 01732-222891 ■ ई-280, पुरानी हाऊसिंग बोर्ड कॉलोनी, सिरसा फ़ोन : 01666-241227 ■ म.नं.499ए/27, गली नं. 7, मदन पुरी, गुडगांव फ़ोन : 9910245461 ■ मकान नं. 1823, एम.आई.जी.बी. भवन, सैक्टर 11-12 पार्ट, नई हाऊसिंग बोर्ड, पानीपत फ़ोन : 0180-2661496 जम्मू और कश्मीर : ■ राजेन्द्र खोसला, एफ-312, हरि सिंह नगर, रिहाड़ी कॉलोनी, जम्मू फ़ोन : 0191-2581624 महाराष्ट्र : ■ चक्रेश्वर रोड के पास, संग्राम शिक्षक सोसायटी, देशमुख आली, चाकण, तालुका-खेड, जिला- पुणे-410501 फ़ोन : 02135-256391 ■ बी-78, डुपलैक्स, रानी इंदरा बाई भोसले विहार, तुलसी बाग, महल, नागपुर-440032 फ़ोन : 09970262099 ■ 1, महाराष्ट्र बैंक कॉलोनी, पहली मंजिल, सार्ई नगर, अमरावती- 444605 फ़ोन: 0721-2511502 ■ पदमा नगर, उषा किरण थियेटर के पीछे, बार्शी रोड, लातूर-413512 फ़ोन: 02382-222231 ■ श्री चांदेवार किराना स्टोर्स, पहली मंजिल, पंचशील चौक, देवरी, गोंदिया फ़ोन: 09423113538 कर्नाटक : न.10, हेसरधट्टा मेन रोड, आठ माइल, रिलायन्स फ़्रेश के पीछे, टी, दासरहल्ली, बंगलोर-560073 फ़ोन : 080-22731441, 9845173601 ■ 51/2, वायु विहार, सिंगापुर लेआउट, विद्यारण्यापुरा पोस्ट, एयर फोर्स स्टेशन के पास, जालाहाली ईस्ट, बंगलोर-560097 फ़ोन : 080-28389929 मध्य प्रदेश : ■ ए-1, आम्र विहार कॉलोनी, नयापुरा बस स्टैण्ड, कोलार रोड, भोपाल फ़ोन : 9826087902, 9425651566 ■ विशाल पेट्रोल पम्प के सामने, इंदौर रोड, नसरुल्लागंज, जिला-सिहोर फ़ोन : 07563-276728 ■ गायत्री विहार कॉलोनी, पिंटो पार्क, मुरार, ग्वालियर फ़ोन: 0751-2666031 राजस्थान : ■ ए-24 बी, पथ नं. 7, जमना नगर, सोडाला, जयपुर फ़ोन : 0141-2221555, 3201555 ■ ए-47, कमला नगर, दूसरा विस्तार, तेजराज जी का स्कूल के पास, डिफेंस कॉलोनी के पीछे, जोधपुर फ़ोन : 0291-3204849 ■ भगतपुरा रोड, कृषि विज्ञान केन्द्र, सांगरिया, जिला-हनुमानगढ़ फ़ोन: 01499-221392 उड़ीसा : शर्माफ पेट्रोल पंप के सामने, खेतराजपुर, सम्बलपुर 768003 फ़ोन : 0663-2545244 हिमाचल प्रदेश : कपूर भवन, परी महल, कुसुम्पटी, शिमला

के ही जल रही है- 'दीवा जले अगम का, बिन बाती बिन तेल।'

कबीर दास जी ने अपने एक दोहे में, बिल्कुल स्पष्ट शब्दों में, यही कसौटी समाज के समक्ष रखी-

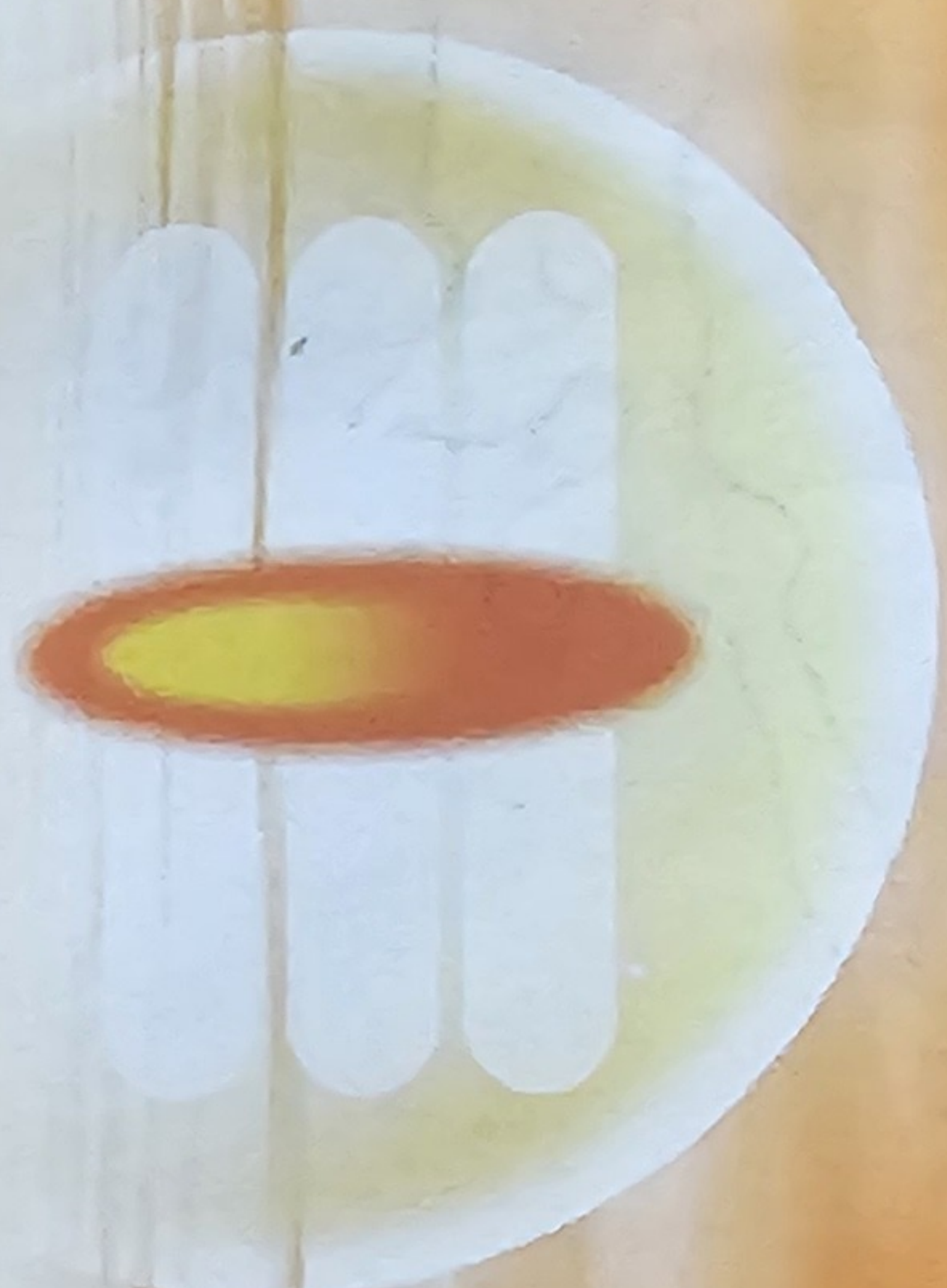
जगमग जोति गगन में झलकै, झीनी राग सुनावै।
मधुर मधुर अनहद धुन बाजै, अमृत की झर लावै।
जगत में बहुत गुरु कनफूका, फाँसी लाय बुझावै।
कहै कबीर सोइ गुरु पूरा, जो कथनी आन मिलावै।

अर्थात् आंतरिक गगन में ईश्वर की अखण्ड ज्योति निरन्तर जगमगा रही है। सच्चे नाम की झीनी-झीनी रागिनी श्वांसी में चल रही है। हर पल, हर क्षण भीतर मधुर अनहद नाद ध्वनित हो रहा है। यह लगातार बिना किसी के बजाए, स्वतः बज रहा है। भीतर के गगन मंडल से अमृत-रस निर्झर झरता रहता है। पर ज़रा गौर करें अंतिम पंक्तियों पर। इनमें कबीर दास जी बड़े ही पते की बात कहते हैं कि आज समाज में बहुतेरे ऐसे गुरु हैं, जो दीक्षा के समय कान में कोई मंत्र फूँक देते हैं और इसे ही पूर्ण ज्ञान कहकर जगत को भरमाते हैं। पर पूरा गुरु वही है, जो एक जिज्ञासु को न केवल इन अनुभूतियों के विषय में बताए, बल्कि उसके भीतर इन्हें प्रकट भी कर दिखाए।

कितना स्पष्ट बोला है! इसी प्रकार, सभी महापुरुषों ने अपनी-अपनी शैली में इसी तथ्य को उजागर किया। साफ और खरे शब्दों में बताया कि पूर्ण गुरु वही हैं, जो भीतर ये दिव्य अनुभूतियाँ करा दें। वह भी तत्काल! ज्ञान-दीक्षा के ही समय।

ॐ

क्यों और कैसे
हारवा करें?



दिव्य ज्योति ज्ञानाति संस्थान

सबसे बड़ी समस्या है। ऐसा नहीं है कि आज गुरुओं का अकाल पड़ा है। आजकल तो हर गली-नुक्कड़ में गुरुओं के मठ व आश्रम खुले हुए हैं। पर सवाल है कि क्या हमें इनमें से किसी को भी गुरु रूप में धारण कर लेना चाहिए? क्या ये सभी पूर्ण व सच्चे हैं? नहीं! क्योंकि यदि होते तो समाज की तस्वीर इतनी बदसूरत और विकृत न होती।

लेकिन यह भी सच है कि नकल उसी की होती है, जिसकी असल भी हो। श्री आशुतोष महाराज जी अक्सर समझाते हैं कि- बाजार में 500 रुपये का नकली नोट चल सकता है, 400 का नहीं। क्योंकि 500 रुपये का असली नोट होता है, 400 का नहीं! इसी प्रकार नकली गुरुओं का अस्तित्व साफ संकेत करता है कि कहीं न कहीं संसार में सच्चे गुरु भी हैं। बस उन्हें जानने के लिए हमें उनकी पहचान चाहिए। संत-महापुरुषों ने शास्त्र-ग्रंथों (जिन्हें हम मानते एवं पूजते हैं) के माध्यम से हमें एक पूर्ण गुरु की पहचान बड़े स्पष्ट शब्दों में बताई है। यह कसौटी या पहचान क्या है? श्री आशुतोष महाराज जी की कृपा से यह पुस्तिका इसी प्रश्न का उत्तर है। अपनी सरल भाषा व शास्त्र-सम्मत संदेशों द्वारा यह पुस्तिका आह्वान करती है कि- 'पानी पीजै छान के, गुरु कीजै जान के।' यह बहुत पुरानी कहावत है। हमारे पूर्वज स्वास्थ्य के प्रति इतने जागरूक थे कि पानी छानकर पीया करते थे। आज तो फिल्टर का युग है। अधिकतर जनता पानी छानकर ही पीती है। पर इसके साथ हमें आध्यात्मिक स्वास्थ्य हेतु अनुभवों पूर्वजों की दूसरी सलाह भी माननी चाहिए। गुरु भी जाँच-परख कर ही धारण करें। ताकि अपने जीवन का तो कल्याण हो ही, समाज के लिए भी उपयोगी सिद्ध हो सकें। आपके जीवन-रथ पर पूर्ण गुरु सारथि बनकर आसीन हों- इसी शुभकामना के साथ यह लघु पुस्तिका आपके हाथों में दे रहे हैं।

गुरु क्यों और कैसे? छात्रा करें?

धूँ तो फूल जंगल में भी खिल जाते हैं। उन्हें नम मिट्टी की गोद मिले न मिले। पर गौर करो इन फूलों का हश्र क्या होता है? कुछ इनका खुशनुमा यौवन कब तक डालियों पर इठला पाता है? पत्ता-पत्ता ही पल न। जल्द ही ये बदहवास हवाओं के शपेड़े खाकर पत्ता-पत्ता बिखर जाते हैं। दो टुके का मोल भी नहीं पा पाते। जानते हैं क्यों होती है इनकी ऐसी गत? क्योंकि इन पर किसी माली की सरपरस्ती नहीं है। बागवान की नज़रे करम नहीं है। जिन पर होती हैं, उनका खिला मुखड़ा चोखा दाम पा लेता है। किसी देवता के गलहार में गुँथा झूले खाता है।

यही कहानी है- एक भक्त श्रद्धालु की! बेशक उसकी मन की डाल पर श्रद्धा की कोपल फूटे, आस्तिकता का फूल खिले। मगर यह फूल कभी अपना जायज़ मुकाम नहीं पा सकता। माया की धूल में खो जाता है। जब तक उस पर एक पूर्ण गुरु की ओट न हो। किसी संत रहबर की रहबरी न हो-

कई मनहारे तर तर हारे, कोई न किनारे चढ़या हू।
सही सलामत तर गए जिन्हा, मुर्शिद दा लड़ फड़या हू।

भला नारद जी से इक्कीस भक्त कौन हो सकता था? वे तो श्रद्धालुओं में सिरमौर थे। वीणा की तारों पर उनकी डँगलियों की वो लगातार थिरकन! उसी धुन में नारायण-नारायण का निरंतर कीर्तन!

अब जी, यहाँ पर कुछ गुरुओं के शिष्य तो अंगद के पाँव की तरह अड़ जाते हैं। कहते हैं- 'स्वामी जी, चलो यह तो हजम होता है कि सद्गुरु ईश्वर-दर्शन कराते हैं। मगर जाते ही किसी गुरु को कैसे इस कसौटी पर कस लें? क्योंकि गुरु-शरण में जाते ही, प्रभु-दर्शन थोड़े न हो जाता है। सबसे पहले तो हमें उनसे ज्ञान-दीक्षा लेकर नाम की कमाई करनी पड़ेगी। मन की मैल धोनी पड़ेगी। रोगी मन की दवा-दारू करनी होगी। करत-करत अभ्यास ले, जड़मति होत सुजान- वाला सूत्र लगाकर खूब साधना अभ्यास करना होगा। अरे भई जम के तपस्या करनी होगी, तपस्या! तब कहीं जाके तो प्रभु का दीदार होगा। ऐसे ही सीधे दीक्षा के समय थोड़े न... हमारे बाबा जी कहते हैं कि वे एक-न-एक दिन जरूर रख को सामने ला खड़ा करेंगे...'।

बहुत खूब! क्या तर्क है या यैँ कहे कि अपवाह है। इससे आज की अस्सी प्रतिशत जनता भरमाई हुई है। 'दीक्षा के समय थोड़े न' और 'एक दिन जरूर दर्शन...' - ये दो पक्तियाँ इतनी भयंकर रूप से ईश्वर-इच्छालुओं और बाबाओं के भक्तों में रिकॉर्ड की गई हैं कि जब उन्हें ऑन करो, यही स्वर निकलते हैं। पर हमें समझ नहीं आता कि यह 'एक दिन' आणा कब? 'दीक्षा के समय थोड़े न...' कहकर, क्या हम उन सभी पूर्ण सत्ताओं, महापुरुषों, अवतारों, पीरों के खिलाफ बगावत नहीं कर रहे, जिन्होंने ढोल बजा-बजा कर मुनादी की थी- मैं सुखी हूँ सुख पाइआ। गुरि अंतरि सबहु वसाइआ। सतिगुरि पुरखि विखालिआ (दिखाया) मसतकि

गुरु कृपा



पूर्ण गुरु तो वही हैं, जो एक जिज्ञासु को उसके अंतर्जगत में प्रभु-प्रकाश का दर्शन करा दें, अनहद नाद श्रवण करा दें, परमात्मा के अव्यक्त नाम को श्रवणों में प्रकट करा दें और दिव्यामृत का पान करा दें।